

Topic 1 :- वोट वेरिफाइड पेपर ऑडिट ट्रेल (VVPAT)



चर्चा में क्यों :-

सर्वोच्च न्यायालय द्वारा घोषणा की गई है कि वह 19 अप्रैल, 2024 को पहले चरण के मतदान से ठीक पहले वोट वेरिफाइड पेपर ऑडिट ट्रेल (VVPAT) परीचों के 100% सत्यापन के लिये याचिकाओं को संबोधित करेगा।

क्या होती है VVPAT मशीन :-

VVPAT मशीन, इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (EVM) की बैलेटिंग यूनिट/मतपत्र इकाई के साथ सल्लग्न एक मशीन होती है इस मशीन का कार्य होता है कि मतदाता ने किस उम्मीदवार को और किस पार्टी को वोट दिया है इस चीज का एक पर्ची के माध्यम से सत्यापन प्रदान करना।

वोट देने की प्रतिक्रिया संपन्न होने के बाद इस मशीन में डिस्प्ले पर एक पर्ची प्रदर्शित होती है जिसके ऊपर मतदाता द्वारा दिए गए अपने वोट के बारे में विवरण दिया रहता है जैसे की किस पार्टी को और किस उम्मीदवार को वोट दिया गया है अपने वोट को सत्यापित करने के लिए मतदाता को सात सेकंड का समय मिलता है।

यह पर्ची 7 सेकंड बाद स्वतः एक कंटेनर में गिर जाती है क्योंकि इसे कोई भी मतदाता अपने साथ नहीं ले जा सकता निर्वाचन आयोग इस मतदाता पर्ची को भविष्य में किसी भी प्रकार के विवाद होने से बचने के लिए सुरक्षित रखती है।

VVPAT लाने का कारण :- इस मशीन को लाने का मुख्य उद्देश्य समय-समय पर खड़े होने वाले सवाल थे जिसके जवाब में VVPAT को लाया गया।

साथ ही चुनाव में पारदर्शिता को और बढ़ाया जाए और किसी भी प्रकार का विवाद उत्पन्न ना हो इसीलिए इस मशीन को अपनाया गया।

VVPAT का इतिहास :-

EVM आधारित मतदान प्रक्रिया में पारदर्शिता बढ़ाने के लिये भारत के चुनाव आयोग (Election Commission of India- ECI) एवं राजनीतिक दलों के बीच एक बैठक के दौरान VVPAT मशीन की अवधारणा को सर्वप्रथम वर्ष 2010 में स्वीकार किया गया।

फील्ड परीक्षण :- जुलाई 2011 में लद्दाख, चेरापूँजी,तिरुवनंतपुरम, पूर्वी दिल्ली तथा जैसलमेर में फील्ड परीक्षण प्रारंभ किए गए इसके परिणामस्वरूप फरवरी 2013 में ECI की एक विशेषज्ञ समिति द्वारा VVPAT को मंजूरी दी गई।

कानूनी पहलू:

वर्ष 2013 में चुनाव संचालन नियम, 1961 में संशोधन करके एक ड्रॉप बॉक्स वाले प्रिंटर को EVM से जोड़ने की अनुमति दी गई थी।

VVPAT का उपयोग पहली बार उपयोग :-

वर्ष 2013 में नगालैंड के नॉकसेन विधानसभा क्षेत्र के सभी 21 मतदान केंद्रों में पहली बार इसका प्रयोग किया गया था। जून 2017 तक इसे 100% अपनाया गया।

VVPAT पर सर्वोच्च न्यायालय:

सुब्रमण्यम स्वामी बनाम भारतीय चुनाव आयोग मामले, 2013 :-

सर्वोच्च न्यायालय ने चुनावों में पारदर्शिता बढ़ाने के लिये VVPAT को अनिवार्य कर दिया।

वर्ष 2019 :- सर्वोच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की गई , जिसमें कम से कम 50% VVPAT पर्चियों की गिनती करने की मांग का अनुरोध किया गया।

परंतु भारत निर्वाचन आयोग (ECI) ने 50% VVPAT पर्चियों की गिनती से उत्पन्न कुछ चुनौतियों के बारे में विंता व्यक्त की है :-

1. चुनाव परिणाम घोषित करने में 5-6 दिनों का विलंब होगा
2. अधिक जनशक्ति की आवश्यकता होगी।

Q. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2017)

1. भारत का निर्वाचन आयोग पाँच-सदस्यीय निकाय है।
2. संघ का गृह मंत्रालय, आम चुनाव और उप-चुनावों दोनों के लिये चुनाव कार्यक्रम तय करता है।
3. निर्वाचन आयोग मान्यता-प्राप्त राजनीतिक दलों के विभाजन/विलय से संबंधित विवाद निपटाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं ?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 2 और 3
- (d) केवल 3

उत्तर: (d)

Q. इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) के इस्तेमाल संबंधी हाल के विवाद के आलोक में भारत में चुनावों की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिये भारत के निर्वाचन आयोग के समक्ष क्या-क्या चुनौतियाँ हैं? (2018)

Q. आदर्श आचार-संहिता के उद्भव के आलोक में, भारत के निर्वाचन आयोग की भूमिका का विवेचन कीजिये। (2022)

Topic 2 :- चरम मौसम के लिए पूर्व चेतावनी प्रणाली



चर्चा में क्यों

चरम मौसम की घटनाओं के कारण होने वाली जीवन और संपत्ति के नुकसान को कम करने के लिए तथा चरम मौसम की घटनाओं के होने के पूर्व सुरक्षा उपाय अपना जा सके इसके लिए भारत अपने पड़ोसी देशों को प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली विकसित करने में मदद कर रहा है।

इन पांच पड़ोसी देशों की कर रहा मदद :- नेपाल, मालदीव, श्रीलंका, बांग्लादेश और मॉरीशस ।

भारत द्वारा यह मदद संयुक्त राष्ट्र की पहल के द्वारा की जा रही है :-

2022 में भारत ने संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित 'सभी के लिए प्रारंभिक चेतावनी' पहल के हिस्से के रूप में अपने पांच पड़ोसी देशों को यह चेतावनी प्रणाली विकसित करने में मदद कर रहा। संयुक्त राष्ट्र द्वारा नवंबर 2022 में मिश्र के शर्म अल-शेख में कोप सम्मेलन (सीओपी) 27 की बैठक में सभी के लिए प्रारंभिक चेतावनी शुरू किए जाने का सुझाव दिया था।

प्रारंभिक चेतावनी पहल का मुख्य उद्देश्य :- वर्ष 2027 तक दुनिया भर में प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों की एक श्रृंखला स्थापित की जा सके।

मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) ने हाल ही में अपनी एक रिपोर्ट प्रकाशित की है जिसके अनुसार, दुनियाभर के लगभग 101 देशों (52 प्रतिशत) ने बहु-खतरा प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली स्थापित की है।

चरम मौसम की घटनाओं के अंतर्गत वैश्विक खतरे :-

चरम मौसम की घटनाओं का अर्थ ऐसी मौसम स्थितियों की अप्रत्याशित घटना से है जिनके परिणाम गंभीर हो सकते हैं या मौसम की ऐसी स्थितियां जो लोगों, कृषि और प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र पर विनाशकारी या नकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं। ऐसी चरम घटनाएँ अल्पकालिक होती हैं, लेकिन उनकी तीव्रता और परिणाम अधिक गंभीर होते हैं।

चरम मौसमी घटनाओं के उदाहरण- अत्यधिक गर्मी, बाढ़, कम समय में अत्यधिक बारिश, बवंडर, उष्णकटिबंधीय चक्रवात और बर्फबारी आदि हैं।

बढ़ते ग्लोबल वार्मिंग के कारण मौसम संबंधी और अधिक गंभीर घटनाओं की उपस्थिति देखने को मिल सकती है।

ग्लोबल वार्मिंग और चरम मौसमी घटनाएं :- बढ़ते ग्लोबल वार्मिंग ने हमारे ग्रह पर जलवायु परिवर्तन को अधिक तेज़ कर दिया है। जिस कारण चरम मौसमी घटनाओं की आवृत्ति, तीव्रता और प्रभाव और भी भयंकर होते जा रहे हैं।

विश्व मौसम विज्ञान संगठन के एक अनुमान के अनुसार, 1970 से 2019 की अवधि के बीच प्राकृतिक आपदाओं में पाँच गुना से अधिक की वृद्धि देखने को मिली है।

भारतीय मौसम विभाग :-

स्थापना :- 1875 में ब्रिटिश भारत सरकार द्वारा की गई थी।

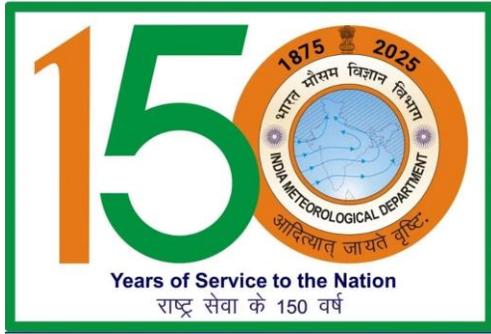
यह विभाग वर्तमान में केंद्रीय पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करता है।

भारतीय मौसम विभाग देश की राष्ट्रीय मौसम विज्ञान सेवा और सभी मौसम और जलवायु सेवाओं के लिए प्रमुख सरकारी एजेंसी के रूप में कार्य करता है।

आईएमडी का मुख्यालय :- शुरु में कोलकाता में स्थापित । बाद में इसे शिमला, फिर पुणे और अंतिम रूप से नई दिल्ली में स्थानांतरित किया गया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) को को वर्ष 2025 में 150 वर्ष पूर्ण होने वाले हैं।

150वें वर्ष की शुरुआत से पहले भारतीय मौसम विज्ञान विभाग को एक नया लोगो प्रदान किया गया है।



नारंगी और हरे रंग के मिश्रण में नया लोगो, वर्तमान लोगो के साथ अंकित संख्यात्मक 150 को दर्शाता है जो भारतीय मानसूनी हवाओं को भारत के ऊपर से गुजरते हुए दिखाया गया है।

भारत में मौसम विज्ञान से संबंधित कुछ प्रमुख और महत्वपूर्ण पहलें :-

राष्ट्रीय मानसून मिशन (NMM): इस मिशन को भारत सरकार द्वारा अलग-अलग समय के आधार पर मानसूनी वर्षा के लिये एक अत्याधुनिक और गतिशील पूर्वानुमान मानसून प्रणाली विकसित करने की दृष्टि से वर्ष 2012 में लॉन्च किया।

मौसम ऐप: मौसम ऐप मौसम की सूचनाओं और चेतावनियों को कम समय में उपयोगकर्ता तक पहुंचाने का अनुकूल माध्यम है।

डॉपलर मौसम रडार: डॉपलर मौसम रडार का विकास डॉपलर सिद्धांत के आधार पर किया जा रहा है, जिसमें रडार को एक परवलयिक डिश एंटीना के साथ जोड़ा जाएगा।

एक फोम सैंडविच गोलाकार रेडोम का उपयोग करके लंबी दूरी के मौसम पूर्वानुमान एवं निगरानी में सटीकता में सुधार करने के लिये डिज़ाइन किया गया है।

डॉपलर मौसम रडार उपकरण निम्न लिखित कार्य करता है :- वर्षा की तीव्रता, पवन एवं वेग को मापने के साथ तूफान के केंद्र और बवंडर की दिशा का पता लगाना।

Topic 3 :- सोडियम साइनाइड पर एंटी-डंपिंग शुल्क

चर्चा में क्यों :-

व्यापार उपचार महानिदेशालय (डीजीटीआर) द्वारा कुछ देशों पर एंटी-डंपिंग शुल्क लगाने की सिफारिश की गई है

किन देशों पर लगनेगी एंटी डंपिंग ड्यूटी :- चीन, यूरोपीय संघ, जापान और कोरिया

इन देशों से आयातित होने वाले सोडियम साइनाइड (NaCN) पर एंटी-डंपिंग शुल्क लगाने के लिए व्यापार उपचार महानिदेशालय ने सिफारिश प्रस्तुत की है। अंतिम रूप से यह निर्णय वित्त मंत्रालय द्वारा लिया जाएगा कि इन सिफारिशों को लागू करना है या नहीं।

एंटी-डंपिंग ड्यूटी :-

किसी उत्पाद को किसी भी देश द्वारा इसकी घरेलू कीमत से नीचे या उत्पादन लागत से कम मूल्य पर किसी अन्य देश में निर्यात किया जाए तो आयातित देश एंटी डंपिंग ड्यूटी का प्रयोग करते हैं

यह ड्यूटी किसी भी वस्तु के आयात पर अधिरोपित वह सीमा शुल्क है, जो सामान्य मूल्य से काफी कम कीमत पर आयातित देश में माल की डंपिंग के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करती है

'काउंटर वेलिंग ड्यूटी' :- इसको ऐसी वस्तुओं पर लगाया किया जाता है, जिन्हें मूल या निर्यात करने वाले देश में सरकारी सब्सिडी प्राप्त होती है।

विश्व व्यापार संगठन ने डंपिंग रोधी उपायों के उपयोग की अनुमति दी जिससे उचित प्रतिस्पर्धा को बनाए रखा जा सके।

सोडियम साइनाइड

यह एक सफेद क्रिस्टलीय गंधहीन ठोस या पाउडर के रूप में होता है।

सोडियम साइनाइड के द्वारा हाइड्रोजन साइनाइड गैस को रिलीज किया जाता है, हाइड्रोजन साइनाइड एक अत्यधिक जहरीला रासायनिक होता है जो अगर मानव शरीर में प्रवेश कर जाए तो शरीर में ऑक्सीजन का उपयोग करने की क्षमता में हस्तक्षेप करना प्रारंभ कर देता है।

सोडियम साइनाइड के प्रयोग :- सोडियम साइनाइड का प्रमुख उपयोग संबंधित अयस्कों से सोना और चांदी निकालने, कीटनाशक बनाने, रंग बनाने, रंगद्रव्य और थोक दवाओं के निर्माण में किया जाता है।

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत व्यापार उपचार महानिदेशालय एंटी-डंपिंग शुल्क का प्रबंधन करने वाला प्राधिकरण है

एंटी डंपिंग ड्यूटी वैधता लागू होने की तारीख से 5 वर्ष के लिए लागू रहता है, इस ड्यूटी को समीक्षा के माध्यम से अगले 5 वर्षों के लिए और बढ़ाया जा सकता है।

Result Mitra